अब्बू खाँ की बकरी

हिमालय पहाड़ पर अल्मोड़ा नाम की एक बस्ती है। उसमें एक बड़े मियाँ रहते थे। उनका नाम था अब्बू खाँ। उन्हें बकरियाँ पालने का बड़ा शौक था। बस एक दो बकरियाँ रखते, दिन भर उन्हें चराते फिरते और शाम को घर में लाकर बाँध देते। अब्बू गरीब थे और भाग्य भी उनका साथ नहीं देता था। उनकी बकरियाँ कभी-न-कभी रस्सी तुड़ाकर भाग जातीं थीं। पहाड़ पर एक भेड़िया रहता था। वह उन्हें खा जाता था। मगर अजीब बात है कि न अब्बू खाँ का प्यार, न शाम के दाने का लालच और न भेड़िये का डर उन्हें भागने से रोकता। हो सकता है, ये पहाड़ी जानवर अपनी आज़ादी से इतना अधिक प्यार करते हों कि उसे किसी कीमत पर बेचने के लिए तैयार न हों।

जब भी कोई बकरी भाग जाती, अब्बू खाँ बेचारे सिर पकड़कर बैठ जाते। हर बार वही सोचते कि अब से बकरी नही पालूँगा। मगर अकेलापन बुरी चीज है। थोड़े दिन तक तो वे बिना बकरियों के रह लेते, फिर कहीं से एक बकरी खरीद लाते।

इस बार वे जो बकरी खरीद कर लाए थे, वह बहुत सुंदर थी। उसके बाल सफेद थे। काले-काले सींग भी बड़े खूबसूरत थे। सीधी इतनी थी कि चाहे तो कोई बच्चा दुह ले। अब्बू खाँ इस बकरी को बहुत चाहते थे। इसका नाम उन्होंने 'चाँदनी' रखा था। दिन भर उससे बातें करते रहते।

अपनी इस नई बकरी चाँदनी के लिए उन्होंने एक नया इंतज़ाम किया। घर के बाहर उनका एक छोटा -सा खेत था। उसके चारों ओर उन्होंने काँटे जमाकर बाड़ा बंधवाई। इसके बीच में वे चाँदनी को बाँधते थे। रस्सी इतनी लंबी रखते थे कि वह खूब इधर-उधर घूम सके। इस तरह बहुत दिन बीत गए। अब्बू खाँ को विश्वास हो गया कि चाँदनी कहीं नहीं जा सकती।

मगर अब्बू खाँ धोखे में थे। आजादी की इच्छा इतनी आसानी से किसी के मन से नहीं जाती। चाँदनी पहाड़ की खुली हवा को भूल नहीं पाई थी। एक दिन चाँदनी ने पहाड़ की ओर देखा। उसने मन ही मन

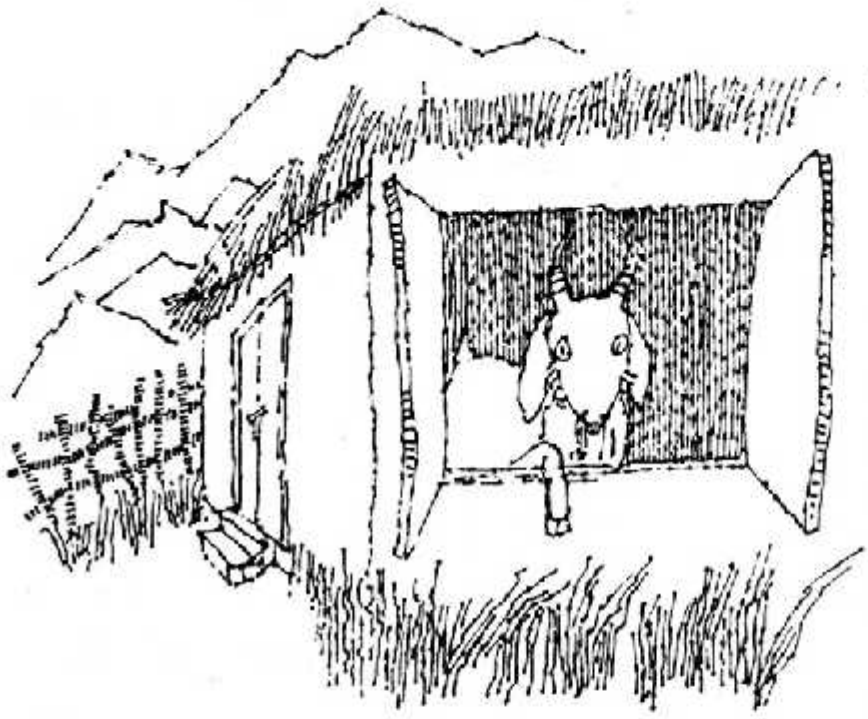

सोचा, वहाँ की हवा और यहाँ की हवा का क्या मुकाबला। फिर वहाँ उछलना, कूदना, ठोकरें खाना और यहाँ हर वक्त बंधे रहना। मन में इस विचार के आने के बाद चाँदनी अब पहले जैसी न रही। वह दिन-पर-दिन दुबली होने लगी। न उसे हरी घास अच्छी लगती और न पानी मजा देता। अजीब-सी दर्द भरी आवाज में वह 'में-में' चिल्लाती।

अब्बू खाँ समझ गए कि हो-न-हो कोई बात ज़रूर है लेकिन उनकी समझ में न आता था कि बात क्या है? एक दिन जब अब्बू खाँ ने दूध दुह लिया, तो चाँदनी उदास भाव से उनकी ओर देखने लगी। मानो कह रही हो, "बड़े मियाँ, अब तुम्हारे पास रहूँगी तो बीमार हो जाऊँगी। मुझे तो तुम पहाड़ में जाने दो।"

अब्बू खाँ मानो उसकी बात समझ गए। चिल्लाकर बोले "या अल्लाह! यह भी जाने को कहती है।" वे सोचने लगे, "अगर यह पहाड़ पर चली गई, तो भेड़िया इसे भी खा जाएगा। पहले भी वह कई बकरियाँ खा चुका है।" उन्हें चाँदनी पर बहुत गुस्सा आ रहा था। उन्होंने तय किया कि चाहे जो हो जाए, वे चाँदनी को पहाड़ पर नहीं जाने देंगे। उसे भेड़िया से ज़रूर बचाएँगे।

अब्बू खाँ ने चाँदनी को एक कोठरी में बंद कर दिया, ऊपर से साँकल चढ़ा दी। मगर गुस्से और झुँझलाहट में वे कोठरी की खिड़की बंद करना भूल गए। इधर उन्होंने कुंडी चढ़ाई और उधर चाँदनी उचककर खिड़की से बाहर।

चाँदनी पहाड़ पर पहुँची, तो उसकी खुशी का क्या पूछना! पहाड़ पर पेड़ उसने पहले भी देखे थे, लेकिन आज उनका रंग और ही था। चांदनी कभी इधर उछलती, कभी उधर। यहाँ कूदी, वहाँ फाँदी, कभी चट्टान पर है, तो कभी खड्डे में। इधर जरा फिसली, फिर सँभली। एक चाँदनी आने से पहाड़ में रौनक आ गई थी।

दोपहर तक वह इतनी उछली-कूदी कि शायद सारी उम्र में इतनी न उछली कूदी होगी। दोपहर ढले उसे पहाडी बकरियों का एक झुंड दिखाई दिया। थोड़ी देर तक वह उनके साथ रही। दोपहर बाद जब बकरियों का झुंड जाने लगा तब वह उनके साथ नहीं गई। उसे आजादी इतनी प्यारी थी कि वह किसी के बंधन में पड़ना ही नहीं चाहती थी।

शाम का वक्त हुआ। ठंडी हवा चलने लगी। सारा पहाड़ लाल हो गया। चाँदनी पहाड़ से अब्बू खाँ के घर की ओर देख रही थी। धीरे-धीरे अब्बू खाँ का घर और काँटेवाला घेरा रात के अँधेरे में छिप रहा था।

रात का अँधेरा गहरा था। पहाड़ में एक तरफ आवाज़ आई 'खूँ-खूँ'। यह आवाज सुनकर चाँदनी को भेड़िए का ख्याल आया। दिन भर में एक बार भी उसका ध्यान उधर न गया था। पहाड़ के नीचे सीटी और बिगुल की आवाज़ आई। वह बेचारे अब्बू खाँ थे। वे कोशिश कर रहे थे कि सीटी और बिगुल की आवाज़ सुनकर चाँदनी शायद लौट आए। उधर से दुश्मन भेड़िए की आवाज़ आ रही थी।

चाँदनी के मन में आया कि लौट चलें। लेकिन उसे खूँटा याद आया। रस्सी याद आई। काँटों का घेरा याद आया। उसने सोचा कि इससे तो मौत अच्छी। आखिर सीटी और बिगुल की आवाज़ बंद हो गई। पीछे से पत्तों की खड़खड़ाहट सुनाई दी। चाँदनी ने मुड़कर देखा, तो दो कान दिखाई दिए, सीधे और खड़े हुए और दो आँखें, जो अंधेरे में चमक रही थी। भेड़िया पहुँच गया था।

भेड़िया जमीन पर बैठा था। उसकी नज़र बेचारी बकरी पर जमी हुई थी। उसे जल्दी न थी। वह जानता था कि बकरी कहीं नहीं जा सकती। वह अपनी लाल-लाल जीभ अपने नीले-नीले होठों पर फेर रहा था। पहले तो चाँदनी ने सोचा कि क्या लड़ूँ। भेड़िया बहुत ताकतवर है। उसके पास नुकीले बड़े-बड़े दाँत हैं। जीत तो उसकी ही होगी। लेकिन फिर उसने सोचा कि यह तो कायरता होगी। उसने सिर झुकाया। सींग आगे को किए और पैंतरा बदला। वह भेड़िए से लड़ गई। लड़ती रही। कोई न समझे कि चाँदनी भेड़िए की ताकत को नहीं जानती थी। वह खूब समझती थी कि बकरियाँ भेड़ियों को नहीं मार सकती। लेकिन मुकाबला ज़रूरी है। बिना लड़े हार मानना कायरता है।

चाँदनी ने भेड़िए पर एक के बाद एक हमला किया। भेड़िया भी चकरा गया। लेकिन भेड़िया था। सारी रात गुज़र गई। धीरे-धीरे चाँदनी की ताकत ने जवाब दे दिया, फिर भी उसने दुगना जोर लगाकर हमला किया। लेकिन भेड़िये के सामने उसका कोई बस नहीं चला। वह बेदम

होकर ज़मीन पर गिर पड़ी। पास ही पेड़ पर बैठी चिड़ियाँ इस लड़ाई को देख रहीं थीं। उनमें बहस हो रही थी कि कौन जीता। बहुत-सी चिड़ियों ने कहा, 'भेड़िया जीता।' पर एक बूढ़ी-सी चिड़िया बोली, 'चाँदनी जीती'।

डॉ. ज़ाकिर हुसैन

1. अब्बू खाँ कहाँ रहते थे?
2. अब्बू खाँ बकरियाँ क्यों पाला करते थे?
3. चाँदनी को पहाड़ की हवा और गाँव की हवा में क्या अंतर लगा होगा?
4. चाँदनी को कोठरी में बंद करने पर वो कैसे निकल गई?
5. यदि तुम्हें अच्छा खाने पीने को मिले और बाँध कर रखा जाए तो तुम क्या करोगे? तुम्हें कैसा लगेगा।
6. चाँदनी भेड़िये से क्या सोचकर लड़ी थी?
7. किसने किससे कहा
   - अ) "चाँदनी जीती।"
   - ब) "या अल्लाह! यह भी जाने को कहती है।"
   - स) "बड़े मियाँ अब मैं तुम्हारे पास रहूँगी तो बीमार हो जाऊँगी।"
8. आज़ादी से तुम क्या समझते हो? क्या तुमको लगता है कि तुम आज़ाद हो? यदि हाँ तो क्यों? यदि नहीं तो क्यों?
9. हमारा देश कब आज़ाद हुआ और आज़ाद होने से हमें क्या फायदा हुआ?
10. नीचे दिये गए शब्दों को खाली स्थान में सही जगह पर लिखो :–

    बस न चलना, बेदम, अकेलापन, रौनक आना, ताकत ने जबाब दे दिया ।

    - अ) ..... से घबराकर लालू ने भैंस पाल ली ।
    - ब) आज़ादी मिल जाने से लालू के चेहरे पर ..... आ गई ।
    - स) लालू दौड़ते-दौड़ते ..... होकर गिर पड़ा ।
    - द) लड़ते-लड़ते लालू की ..... ।
    - इ) ..... पर लालू भाग खड़ा हुआ ।

10. ऊपर लिखे शब्दों से दो–दो वाक्य और बनाओ।
11. यदि तुमने कोई जानवर पाला है तो उसके बारे में लिखो: तुमने क्या पाला है? वो कैसा है? उसकी क्या बातें है जो तुम्हें अच्छी लगती हैं और क्या बातें हैं जो तुम्हें अच्छी नहीं लगती?
12. कहानी में आए रेखांकित वाक्यों को अपनी कापी में लिखो और पढ़ो। तथा अपने दोस्तों से चर्चा करो।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

विपरीतार्थी वाक्य लिखो

सन् 1947 में भारत आजाद हुआ। — सन् 1947 में भारत अंग्रेज़ों का गुलाम हुआ।

चाँदनी उदास रहने लगी। — चाँदनी खुश रहने लगी।

चाँदनी दिन पर दिन दुबली होने लगी। — ----------

अब्बू खाँ बेचारे सिर पकड़कर बैठ जाते। — ----------

भेड़िया बहुत ताकतवर है। — ----------

चाँदनी के रहने का अब्बू खाँ ने क्या इन्तज़ाम किया था? अपने शब्दों में लिखो।

हिमालय पहाड़ पर अल्मोड़ा नाम की एक बस्ती है। उसमें एक बड़े मियाँ रहते थे। उनका नाम था अब्बू खाँ । उन्हें बकरियाँ पालने का बड़ा शौक था। बस एक–दो बकरियाँ रखते, दिन भर उन्हें चराते फिरते और शाम को घर में लाकर बाँध देते। अब्बू गरीब थे और भाग्य भी उनका साथ नहीं देता था। उनकी बकरियाँ रस्सी तुड़ाकर भाग जाया करती थीं। पहाड़ पर एक भेड़िया रहता था। वह उन्हें खा जाता था। मगर अजीब बात है कि न अब्बू खाँ का प्यार, न शाम के दाने का लालच और न भेडिये का डर उन्हें भागने से रोकता। उन्हीं बकरियों में एक चाँदनी नाम की बकरी थी जिससे अब्बू को इतना अधिक प्यार था कि वे उसे किसी भी कीमत पर बेचने को तैयार न थे।

कहानी के अंश में आए सर्वनामों को छाँटो । यह भी लिखो कि उनका किसके लिए उपयोग हुआ है।

उसमें	अल्मोड़ा के लिए	-------	-------
-------	-------	-------	-------
-------	-------	-------	-------
-------	-------	-------	-------

इन वाक्यों में आये हुए संज्ञा शब्दों की जगह सर्वनाम का प्रयोग करते हुए वाक्य दोबारा लिखो।

1. भेड़िया उन्हें खा जाता था। ----------
2. अब्बू खाँ गरीब थे । ----------
3. अब्बू खाँ को बकरियाँ पालने का शौक था। ----------
4. चाँदनी को अपनी आजादी प्यारी थी। ----------

कहानी में ढूँढ कर बताओ इसके लिए क्या बताया गया है।

उदाहरण–

उसमें बड़े मियाँ रहते थे। ——————अल्मोड़ा नाम की बस्ती में।

वह बकरियाँ खा जाता था। ——————————

अब्बू खाँ ने चाँदनी को उसमें बन्द कर रखा था। ——————————

अब्बू खाँ इन चीज़ों की आवाज़ से चाँदनी को बुलाते थे। ——————————

भेड़िया इसे अपने नीले–नीले होठों पर फेर रहा था। ——————————

चाँदनी को पीछे से पत्तों की यह आवाज़ सुनाई दी। ——————————

अब्बू खाँ इसके कारण फिर कहीं से एक बकरी खरीद लाए। ——————————

कुछ शब्द किन्हीं खास आवाज़ों के लिए ही उपयोग किए जाते हैं,

जैसे – खड़खड़ाहट – पत्तियों की खड़खड़ाहट सुनाई दी।

गड़गड़ाहट ——————————

————— ——————————

————— ——————————

————— ——————————

————— ——————————

कहानी में एक वाक्य है – मगर अकेलापन बहुत बुरी चीज़ है। ***अकेलापन*** *का क्या मतलब है आपस में पता करो*

'पन' से अन्त होने वाले कई शब्द सुने होंगे। उन्हें यहाँ लिखो और हर एक से एक वाक्य भी बनाओ।

————— ——————————

————— ——————————

————— ——————————

————— ——————————

————— ——————————

भेड़िये और चाँदनी की लड़ाई का यहाँ चित्र बनाओ।

चिड़िया का गीत

सबसे पहले मेरे घर का
अंडे जैसा था आकार।
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।

फिर मेरा घर बना घोंसला,
सूखे तिनके से तैयार।
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।
फिर मैं निकल गई शाखों पर,
हरी-भरी थी जो सुकुमार।
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।
आखिर जब मैं आसमान में,
उड़ी अपने पंख पसार,
तभी समझ में मेरी आया,
बहुत बड़ा है यह संसार।

– निरंकार देव 'सेवक'

- इस कविता में जो कहा गया है उसका विवरण एक पैराग्राफ में लिखो।
- चिड़िया को कैसे और कब पता चला कि संसार बहुत बड़ा है?
- बताओ इनमें कौन कैसी दुनिया देखेगा, और क्यों? चर्चा करो और हर एक के बारे में कम से कम 2–3 वाक्य लिखो।
- **चूहा, चिड़िया, बंदर, बत्तख, कुत्ता, कौआ, चील, चमगादड़।**
- चिड़िया अपना घोंसला किन–किन चीज़ों को जोड़कर बनाती है? चिड़िया को घोंसला बनाते हुए देखो और उसके घोंसला बनाने का विवरण अपनी कॉपी में लिखो।
- इस कविता के लिए कोई और शीर्षक सोचा।

1. **नीचे** लिखे शब्दों को शामिल करके एक कहानी/विवरण लिखो।

आकाश, संसार, घोंसला, शाखा, आसमान, पंख,

---

2. यदि आप चिड़िया होते तो आपको कैसा लगता ? आप क्या–क्या करते ? एक पैराग्राफ लिखो।

गाय का गीत

चार पाँव की चावक चप्पू
गाय नाम से जाने इसको।
काली, लाल, सफेद रंगों में
बछड़ा लिये खड़ी जंगल में।
खाती घास, खली और सानी
अनाज पत्तों से न गिलानी।
दूध उसका मीठा–मीठा
पीते अन्नु, बन्नु, गीता।
दही, मही, घी की सुविधा।
बछड़ा इसका भोला–भाला
खेतों का भारी रखवाला।
गोबर से बनते उपराले
जो ईंधन का काम भी करते।
खाद से सारे खेत सँवरते
मरकर भी वह हमको देती
बटन, बक्से, कंघी, चोटी।
भारत की पहचान पुरानी
गाय-बछड़े की अमर कहानी।

3. आपकी समझ में संसार क्या होता है ? तीन–चार वाक्यों में लिखो।

---

4. नीचे लिखे शब्दों के पहले **सु** लगाकर नए शब्द लिखो।

कुमार _____ शील _____ रक्षा _____ _____ _____

रंग _____ पारी _____ मति _____ _____ _____

कर्ज़ा

दोपहर का समय था। आकाश में काले घने बादल छाए हुए थे। रोशनी काफी कम हो चुकी थी, पर रह–रह कर बिजली चमकती और उसकी घड़घड़ाहट आती थी। कहीं दूर से सूखी मिट्टी पर पानी गिरने की खुशबू आ रही थी। कुछ ही देर में गाँव में भी पानी बरसने वाला था।

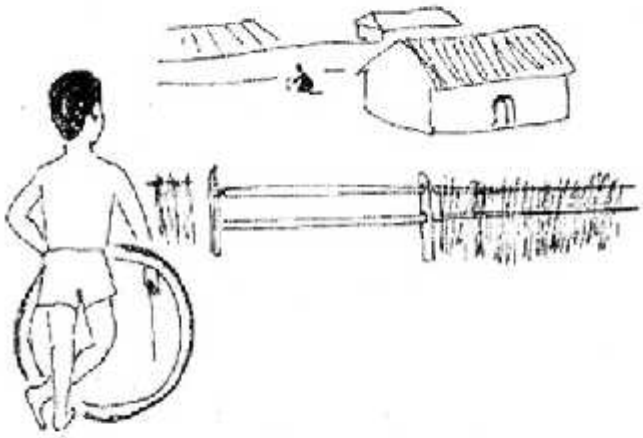

लेकिन इस वक्त गाँव काफी सूना–सूना सा था। बोनी के काम ने किसी के पास फुर्सत नहीं छोड़ी थी– आदमी, औरत, बैल, यहाँ तक कि कुत्ते भी सभी खेतों में नज़र आते। लखन के घर में भी कोई बड़ा नहीं था। उसकी छोटी बहन बिछौने पर सो रही थी। घर में कोई और काम भी नहीं था। इसलिए वह मज़े से अपना टायर ठेलता घूम रहा था।

भागते–भागते जब लखन गुरदयाल के घर के सामने से निकला तो उसे कुछ दिखाई दिया। वह रुका और टायर–डंडा हाथ में पकड़े खड़ा रहा। उसने देखा कि गुरदयाल के दादा अपने हाथ में कुछ पकड़ कर ला रहे थे। उनके छोटे–छोटे सफेद बाल, सफेद रंग की ही आधी–सी दाढ़ी और थोड़ी झुकी–सी पीठ देख कर ही समझ में आ जाता कि उनकी उम्र कितनी थी। आजकल वे खेत तो नहीं जाते थे पर फिर भी घर के कामों को करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होती थी।

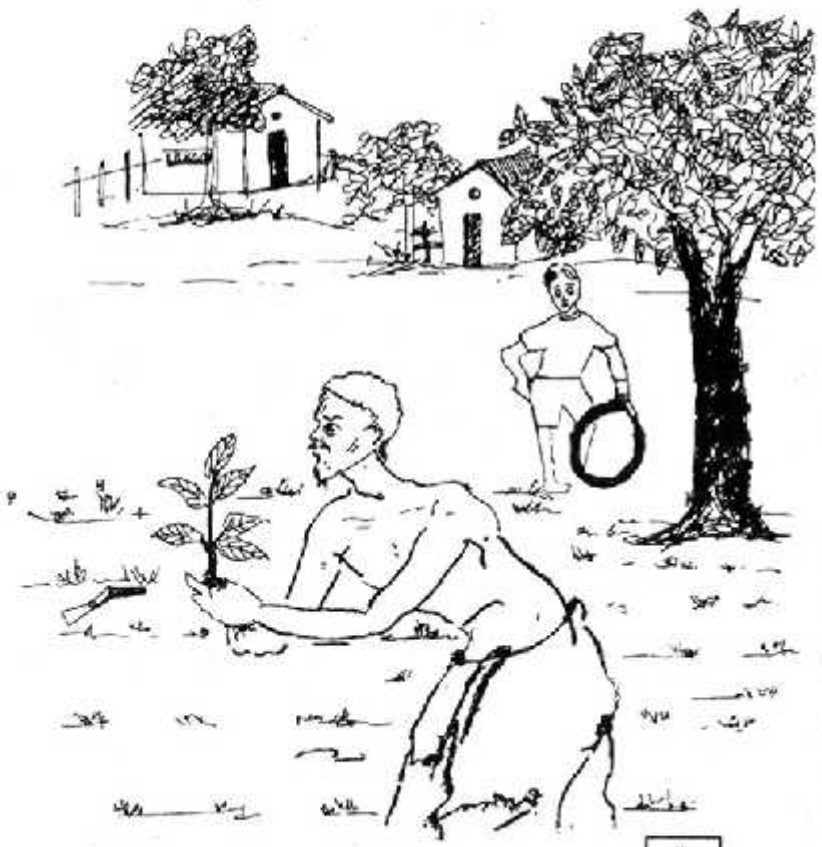

लखन को दूर से समझ में नहीं आया कि दादा क्या कर रहे थे। उसने फाटक से बाँस हटाया और अंदर गया। दादा एक रोपा ला रहे थे, शायद बाड़े में लगाने के लिए। दादा के पास पहुँचकर लखन खड़ा हो गया।

दादा मुस्कुराए और काम करते रहे। वे खुरपी से ज़मीन खोद रहे थे। लखन भी एक नुकीली लकड़ी लेकर उनके साथ जुट गया। दादा एक आम का रोपा बो रहे थे। लेकिन दादा ऐसा क्यों कर रहे थे, ये उसे समझ में नहीं आ रहा था।

"दादा, आप ये पेड़ क्यों लगा रहे हैं?" उसने पूछा।

दादा ने रोपे के ऊपर मिट्टी ढकेली और उसे थपथपाते हुए कहा, "कुछ सालों बाद इनमें फल लगेंगे, इसलिए।"

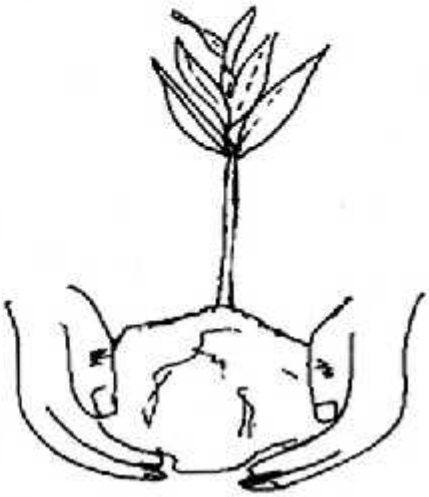

"इस वाले आम में कितने सालों में फल लगेंगे?" लखन ने पूछा।

"अच्छी फसल में यही कोई छह–सात साल तो लगेंगे।"

"पर दादा फल लगने में तो बहुत समय लग जाएगा। आपको तो फल खाने को ही नहीं मिलेंगे।" लखन ने बड़ी मासूमियत से कहा।

दादा गर्दन हिलाकर मुस्कुराए। फिर उन्होंने कहा, "हां, जब तक ये फल दे तब तक शायद मैं ज़िंदा न रहूं। पर... वो देखो।" दादा ने बाड़े के एक छोर पर लगे बहुत पुराने आम के पेड़ की ओर इशारा किया।

"वो पेड़ मेरे पिताजी ने लगाया था। उसके फल मेरे पिताजी को नहीं, बल्कि मुझे खाने को मिले। हर मौसम के फलों को खाते समय मैं इसके बारे में सोचता हूँ, ज़िंदगी भर जितने फल खाए हैं वो दूसरों के लगाए हुए पेड़ों के थे। अब सोचा..." दादा ने बस इतना कहा और चुप हो गए।

कुछ देर तक आसमान में बादलों को देखकर वे बोले, "लगता है पानी आने से पहले एक और रोपा लगाने का समय है।" यह कह कर वे रोपा लाने के लिए बढ़े। पर इससे पहले कि वे वहाँ तक पहुँचते, लखन दौड़कर रोपा उठा लाया।

अभ्यास

1. लखन आराम से क्यों और क्या करता हुआ घूम रहा था?
2. गुरदयाल के दादा कैसे दिखते थे?
3. लखन ने दादाजी से ऐसा क्यों कहा – "आपको तो फल खाने को ही नहीं मिलेंगे।"?
4. दादाजी की इस बात को समझाओ, "ज़िंदगी भर जितने फल खाए हैं वो दूसरों के लगाए हुए पेड़ों के थे।"
5. इस कहानी में किस कर्ज़े की बात हो रही है?
6. हमारे आसपास लगे फलों के पेड़, पानी देने वाली नदियाँ व कुएँ, हवा, फूल व उनकी महक, मिट्टी व फ़सलें हमसे कर्ज़े का भुगतान किस प्रकार माँगती है?
7. तुम्हें दादा के पेड़ लगाने के बारे में क्या कहना है – क्या उन्हें पेड़ लगाना चाहिए था या नहीं? अपने उत्तर का कारण भी लिखना।
8. रोपा किसे कहते हैं? अपने आसपास देखो कौन–कौन से पेड़, पौधे या फसल रोपे से लगाई जाती हैं? रोपा किस मौसम में लगाया जाता है?